

युवा पीढ़ी और वंदे मातरम: वर्तमान परिप्रेक्ष्य

डॉ कमल सैनी¹, सुन्दर रानी²

¹ भारतीय प्राणि सर्वेक्षण, पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

² लेबर ब्यूरो, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, चंडीगढ़, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12247>

सारांश

आज की 'युवा पीढ़ी' तकनीकी— नवाचार, अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य और पारंपरिक व आधुनिक सिद्धांतों से संपन्न हैं। जोकि मानवतावाद, एकजुटता, विश्व बंधुत्व, सार्वभौमिक न्याय और सर्वजन हिताय पर विश्वास रखते हैं। युवाओं में वंदे मातरम के अर्थ पर सबसे बड़ा प्रभाव शिक्षा और संस्कृति का है। स्कूलों में राष्ट्रगान और वंदे मातरम का पाठ देशभक्ति, निष्ठा और अनुशासन के साथ जोड़कर सिखाया जाता है। वंदे मातरम—यह केवल दो शब्द नहीं हैं, बल्कि एक ऐसी भावना है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की धड़कन, राष्ट्रीय पहचान की गरिमा और मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम का प्रतीक है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वंदे मातरम ने लाखों युवाओं को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध का मार्गदर्शक बनाया। हालांकि यह अभिव्यक्ति 19वीं और 20वीं सदी के राजनीतिक संघर्षों से जुड़ी है, पर आज जब हम इसे युवा पीढ़ी के संदर्भ में देखते हैं, तो इसकी व्याख्या, भावना और उपयोग के मायने समय के साथ बदल चुके हैं। यह आलेख वर्तमान परिप्रेक्ष्य से यह समझने का प्रयास करेगा कि आधुनिक युवा वंदे मातरम को कैसे ग्रहण करते हैं, किन चुनौतियों और समीकरणों से गुजरते हुए यह प्रतीक उनके जीवन में प्रासंगिक है, और किस तरह से यह भावनात्मक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक विमर्शों के बीच जुड़ा हुआ है। वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए वंदे मातरम का क्या अर्थ है? क्या यह गीत उनके लिए केवल इतिहास की पुस्तकों में दर्ज एक धरोहर है, या यह आज भी उनकी चेतना को झकझोरने की क्षमता रखता है? क्या डिजिटल युग की तेज रफ्तार जिंदगी में इस गीत की भावपूर्ण धुन युवाओं के कानों तक पहुंच पाती है?

मूल शब्द: राष्ट्रचेतना, सांस्कृतिक विरासत, देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्र निर्माण

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और 'वंदे मातरम' का दर्शन

'वंदे मातरम' भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास, संस्कृति, संघर्ष और अस्मिता का वह महामंत्र है, जिसने देश की नियति को बदला। यह गीत जब पहली बार सार्वजनिक मंचों पर गूंजा, तो इसने एक सोए हुए राष्ट्र को झकझोर कर जगा दिया। यह परतंत्रता के विरुद्ध एक ऐसा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शंखनाद था, जिसने देश को सिर्फ एक जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि जीती-जागती 'माँ' का रूप दे दिया। "वर्तमान पीढ़ी के दृष्टिकोण को समझने से पहले, इस मंत्र के मूल दर्शन को समझना आवश्यक है। 1870 के दशक में जब बंकिमचंद्र ने इसकी रचना की, तब भारत गहरे सांस्कृतिक अवसाद से गुजर रहा था। ब्रिटिश हुकूमत भारतीयों के आत्मसम्मान को कुचल चुकी थी। ऐसे समय में बंकिमचंद्र ने देश को एक 'जड़' भूमि का टुकड़ा मानने के बजाय उसे 'सशक्त, अन्नपूर्णा, ज्ञानदायिनी और शक्तिदायिनी' माँ के रूप में चित्रित किया:

"त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी कमला कमलदलविहारिणी वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्..."

वंदे मातरम पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में उनके उपन्यास "आनंदमठ" के एक अंश के रूप में प्रकाशित हुआ था। मातृभूमि को शक्ति, समृद्धि और दिव्यता का प्रतीक बताते हुए इस गीत ने भारत की एकता और स्वाभिमान की जागृत भावना को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की और शीघ्र ही यह राष्ट्र भक्ति का एक स्थायी प्रतीक बन गया। 1896 में, रवींद्रनाथ टैगोर जी ने 'वंदे मातरम' को धुन में पिरोया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई। यह गीत भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे देश में गूंज उठा। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश राज को खुली चुनौती दी। खुदीराम बोस से लेकर अशफाकउल्ला खान तक, चंद्रशेखर आजाद से लेकर

तिरुपुर कुमारन तक, नारा एक ही था। यह अब सिर्फ एक गीत नहीं रहा, यह भारत की सामूहिक आत्मा की आवाज बन गया था। महात्मागान्धी ने स्वयं स्वीकार किया था, 'वंदे मातरम' में "सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति" थी। महर्षि अरविंद जी ने इसीलिए कहा था कि, यह "भारत के पुनर्जन्म का मंत्र" है।

समय का चक्र बदला, देश स्वतंत्र हुआ और आज हम इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में जी रहे हैं। आज भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाला देश है। डिजिटल क्रांति, वैश्विक संस्कृति, सोशल मीडिया, एआई (AI) और उपभोक्तावाद के इस दौर में खड़ी हमारी युवा पीढ़ी का मानस पुरानी पीढ़ियों से काफी भिन्न है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आज की इस आधुनिकता, तार्किक और वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर युवा पीढ़ी के लिए 'वंदे मातरम' के क्या मायने हैं? क्या यह गीत उनके लिए केवल राष्ट्रीय पर्वों पर गाया जाने वाला एक औपचारिक गान है, या फिर यह उनके भीतर आज भी वही ऊर्जा, देशभक्ति और उत्तरदायित्व का बोध जगाता है जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जगाता था? वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा पीढ़ी और वंदे मातरम के अंतर्संबंधों को समझना बेहद दिलचस्प और महत्वपूर्ण है।

आधुनिक युवा और वंदे मातरम: एक नया संवाद

आधुनिक भारत में श्रुवा पीढ़ी का अनुमान 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग के बीच माना जाता है, जो राष्ट्रीय जनसंख्या में लगभग 27% का हिस्सा है। सूचना के त्वरित प्रवाह और सोशल मीडिया ने युवा मानसिकता के गठन का रूप बदल दिया है। सूचना की पहुँच, विरोधाभासी विचारों का सामना, और निजी व सार्वजनिक पहचान के बीच तकरार—यह सब नई चुनौतियाँ लाता है। युवा अब केवल पारंपरिक माध्यमों से प्रभावित नहीं होते; वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल कैम्पेन, और वैश्विक संवादों से भी सीखते और प्रभावित होते हैं। इस बदलाव के

कारण वंदे मातरम जैसे राष्ट्रीय प्रतीक का अर्थ भी उनके मस्तिष्क में नए संदर्भों में परिभाषित होता है। आधुनिक युवा वर्ग में वंदे मातरम के अर्थ पर चार मुख्य दृष्टिकोण देखे जा सकते हैं: पारंपरिक राष्ट्रवाद: कई युवाओं के लिए वंदे मातरम अब भी गर्व और वफादारी का भाव जगाता है। स्कूलों, सार्वजनिक समारोहों और खेल कार्यक्रमों में यह गीत राष्ट्र-उत्सव की तरह गाया जाता है। यह एक तरह की सामूहिक आत्म-प्रतिष्ठा का माध्यम है। युवा इस गीत को राष्ट्रीय जुनून, अनुशासन और एकता के प्रतीक के रूप में देखते हैं; समावेशी दृष्टिकोण: कुछ युवाओं ने वंदे मातरम को मातृभूमि के प्रति प्रेम की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा है—जिसमें धर्म, जाति और भाषाई भेदभाव का स्थान नहीं है। इनके अनुसार, वंदे मातरम का अर्थ केवल शब्दों पर नहीं, बल्कि क्रियाओं पर भी टिका होना चाहिए—यानी समाज सेवा, समानता, और न्याय के लिए काम करना; आलोचनात्मक नजरिया: कुछ युवा इसे हेरिटेज और इतिहास के संदर्भ में महत्व देते हुए भी यह मानते हैं कि वंदे मातरम का उपयोग कभी-कभी राजनीतिक विरोधाभास और अलगवादी रुढ़ियों के समर्थन में भी हुआ है। वे चेतावनी देते हैं कि भावनात्मक राष्ट्रवाद का प्रयोग, जब असहनशीलता या बहुसंख्यकवादी पॉलिसीज को प्रेरित करने के लिए हो, तो वह लोकतंत्र के मूल्यों को कमजोर कर सकता है; वसुधैव कुटुम्बकम् का दृष्टिकोण: वैश्वीकरण से जुड़ी युवा पीढ़ी में कई लोग वंदे मातरम जैसी राष्ट्रीय अभिव्यक्तियों को व्यक्तिगत पहचान का एक हिस्सा मानते हुए भी ज्यादा बड़ी वैश्विक जिम्मेदारियों (जैसे क्लाइमेट एक्शन, मानवाधिकार) पर भी जोर देते हैं। उनके लिए राष्ट्रीय गर्व और वैश्विक दायित्व विरोधी नहीं, बल्कि साथ-साथ हो सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा और वंदे मातरम का वैचारिक जुड़ाव

आज की युवा पीढ़ी वंदे मातरम को किस तरह देखती है, इसे हम कुछ प्रमुख बिंदुओं के अंतर्गत समझ सकते हैं। संगीत और संस्कृति का नवीनीकरण: यह एक तर्कपूर्ण सत्य है कि 1997 में आए ए.आर. रहमान के एल्बम श्वंदे मातरम (मां तुझे सलाम) ने इस राष्ट्रीय गीत को युवा पीढ़ी के दिलों में दोबारा स्थापित कर दिया। रहमान ने इसके पारंपरिक राग (देश) को आधुनिक रॉक और पॉप संगीत के तत्वों के साथ मिलाकर एक ऐसा संगीत तैयार किया, जिसने युवाओं की रगों में जोश भर दिया। आज का युवा जब इयरफोन लगाकर श्मां तुझे सलाम सुनता है, तो वह किसी राजनीतिक दबाव में नहीं होता; वह उस गीत की ऊर्जा और मातृत्व के प्रति कुतर्जता के भाव से स्वतः स्फूर्त होकर जुड़ता है। पलेश मॉक्स, कॉलेज फेस्ट, स्वतंत्रता दिवस के रील्स और शॉर्ट्स में इस गाने का इस्तेमाल यह दिखाता है कि युवाओं ने वंदे मातरम को अपने आधुनिक तौर-तरीकों में ढाल लिया है। यह उनके लिए 'संयमित' भी है और 'देशभक्तिपूर्ण' भी; प्रतीकात्मकता से आगे: कर्म के रूप में वंदे मातरम: आज के युवा के लिए देशभक्ति की परिभाषा सीमा पर जाकर लड़ना या सिर्फ नारे लगाना नहीं है। उनके लिए वंदे मातरम का अर्थ है 'राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना' जैसे एक युवा सॉफ्टवेयर इंजीनियर जो भारत में रहकर स्टार्टअप शुरू करता है और रोजगार पैदा करता है, वह वंदे मातरम के 'सुजलां सुफलां' के सपने को साकार कर रहा है; एक युवा पर्यावरणविद् जो नदियों की सफाई और वृक्षारोपण के लिए काम कर रहा है, वह असल में 'मलयजशीतलाम् सस्यश्यामलाम्' (मलयाचल की हवाओं से शीतल और फसलों से हरी-भरी मां) की सेवा कर रहा है; सूखे और बाढ़ के समय सोशल मीडिया के जरिए क्राउडफंडिंग करने वाले और जमीन पर जाकर मदद करने वाले युवा इस गीत की मूल भावना को जी रहे होते हैं। आज का युवा वंदे मातरम को एक 'नारे' से ज्यादा एक 'उत्तरदायित्व' के रूप में देखता है। 26 अक्टूबर 2025 को 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'वंदेमातरम्' गीत के इस इतिहास की देशवासियों को

फिर से याद दिलाई और राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर से भारत सरकार की ओर से अगले एक वर्ष तक अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया। इन आयोजनों के माध्यम से देश भर में 'वंदे मातरम्' का पूर्ण गान होगा, जिससे देश की युवा पीढ़ी 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विचार को आत्मसात कर पाए।

रुढ़िवादिता और विवादों से दूरी: युवा दृष्टिकोण

दशकों से 'वंदे मातरम' को लेकर कुछ राजनीतिक और धार्मिक विवाद भी रहे हैं। कुछ हलकों में इसके मानवीकरण और मूर्तिपूजा जैसे प्रतीकों पर आपत्ति जताई गई। लेकिन यदि हम आज के आम भारतीय युवा (चाहे वह किसी भी धर्म का हो) के मनोभाव जानें, तो हम पाएंगे कि वह इन विवादों से काफी हद तक ऊब चुका है। युवा पीढ़ी का एक बड़ा हिस्सा यह समझता है कि रूढ़िवाद से प्रेम सर्वोपरि है: बंकिमचंद्र ने जिस मां की कल्पना की थी, वह कोई सांप्रदायिक प्रतीक नहीं, बल्कि इस देश की मिट्टी, नदियां, पहाड़ और लोग हैं; जबरदस्ती के खिलाफ तर्करू आज का युवा किसी भी चीज को थोपे जाने के खिलाफ है। वे मानते हैं कि वंदे मातरम के प्रति सम्मान दिल से आना चाहिए, न कि किसी कानूनी बाध्यता या राजनीतिक एजेंडे के तहत। जब इसे स्वेच्छा पर छोड़ दिया जाता है, तो युवा इसके साथ अधिक पवित्रता और गहराई से जुड़ते हैं; विविधता का सम्मानरू युवा पीढ़ी इस बात को स्वीकार करती है कि भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है। यदि कोई वंदे मातरम की जगह 'हमारे जहां से अच्छा' या 'जय हिंद' कहकर अपनी देशभक्ति व्यक्त करता है, तो उसकी निष्ठा पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। युवाओं का यह लचीलापन और परिपक्वता समाज में सद्भाव बनाए रखने के लिए बेहद जरूरी है।

युवा और वंदे मातरम: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

युवा पीढ़ी और वंदे मातरम के बीच का संबंध कठोर या एकरूप नहीं है; यह जटिल, बहुमुखी और गतिशील है। आधुनिक युवा इस प्रतीक को केवल अतीत के स्मारक के रूप में नहीं देखते—वे उसे वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की जिम्मेदारियों के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। वे चाहते हैं कि वंदे मातरम सिर्फ जुबानी अभिव्यक्ति न रहकर व्यवहार, नीति, और सामाजिक क्रियाओं से जुड़ा रहे। आज भी 'वंदे मातरम' को लेकर कुछ विवाद और चुनौतियाँ हैं जैसे अनिवार्यता और अभिव्यक्ति की आजादी—जब स्कूलों में वंदे मातरम गाना 'जरूरी' कर दिया जाता है, तो कुछ युवाओं को लगता है कि यह उन पर जबरदस्ती थोपा जा रहा है। उन्हें लगता है कि अपनी मर्जी से देशभक्ति दिखाने की आजादी छीनी जा रही है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(d) हर नागरिक को 'अभिव्यक्ति की आजादी' देता है। इसमें 'चुप रहने का अधिकार' भी शामिल है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि देशभक्ति दिल से आती है, इसे किसी पर ज़बरदस्ती थोपा नहीं जा सकता। अदालत ने समय-समय पर साफ किया है कि राष्ट्रगीत का सम्मान करना हर नागरिक का कर्तव्य है, लेकिन किसी को भी इसे गाने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता (जैसे प्रसिद्ध बिजोय इमैनुएल बनाम केरल राज्य मामले में राष्ट्रगान को लेकर कोर्ट ने यह व्यवस्था दी थी); धर्म और संस्कृति की राजनीति—कुछ अलग-अलग समुदायों या धर्मों के लोगों को इस गीत के इतिहास या इसके कुछ शब्दों से आपत्ति है। उन्हें लगता है कि यह गीत उनके धार्मिक या सांस्कृतिक तौर-तरीकों से मेल नहीं खाता, इसलिए वे इस पर सवाल उठाते हैं। इसी विवाद के कारण 1937 में तत्कालीन सरकार ने तय किया था कि इस गीत के केवल पहले दो छंद (Stanzas) ही गाए जाएंगे, जिनमें केवल मातृभूमि की प्राकृतिक सुंदरता (सुजलाम, सुफलाम) का वर्णन है, कोई धार्मिक प्रतीक नहीं है। आज भी आधिकारिक तौर पर केवल शुरुआती हिस्से को ही मान्यता प्राप्त है, फिर भी विवाद पूरी तरह खत्म नहीं हुआ।

सोशल मीडिया पर बहस और गुस्सा— फेसबुक, एक्स (ट्विटर) या व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया पर इस मुद्दे को लेकर लोग बहुत भावुक हो जाते हैं। इसके चक्कर में लोग आपस में दो गुटों में बंट जाते हैं और बहस अक्सर शांति से होने के बजाय गुस्से और लड़ाई-झगड़े का रूप ले लेती है। शांति से बैठकर इतिहास या कानून समझने के बजाय, लोग कमेंट बॉक्स में एक-दूसरे को ट्रोल करने लगते हैं। इससे समाज में आपसी भाईचारा कम होता है और वैचारिक खाई चौड़ी हो जाती है।

तमाम विवादों के बाद भी, आज की युवा पीढ़ी 'वंदे मातरम' को एक नए और सकारात्मक नज़रिए से देखती है। और यथासंभवतः संभावनाएँ उपलब्ध हैं जैसे सबको साथ लेकर चलना— आज के युवा चाहते हैं कि 'वंदे मातरम' किसी विवाद या बंटवारे की वजह न बने, बल्कि यह देश के हर धर्म, जाति और संस्कृति के लोगों को आपस में जोड़ने का ज़रिया बने। यह गीत किसी पर दबाव बनाने के लिए नहीं, बल्कि देश की अनेकता में एकता का जश्न मनाने के लिए इस्तेमाल होना चाहिए; सिर्फ नारा नहीं, काम में देशभक्ति— युवाओं का मानना है कि सिर्फ खड़े होकर श्वंदे मातरम गा लेना काफी नहीं है। इस गीत की असली भावना तब दिखेगी जब हम अपने व्यवहार में बदलाव लाएँ, अच्छी नीतियाँ बनाएँ और समाज सुधार के काम करें। जैसे—देश को स्वच्छ रखना, पर्यावरण को बचाना, और दूसरों की मदद करना ही असल में 'वंदे मातरम' (मातृभूमि की सेवा) है; देश से प्यार और दुनिया के प्रति ज़िम्मेदारी — युवा मानते हैं कि अपने देश पर गर्व करना और पूरी दुनिया के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाना (जैसे—ग्लोबल वॉर्मिंग, मानवाधिकार या वैश्विक शांति के लिए काम करना) अलग-अलग बातें नहीं हैं। वे एक सच्चे देशभक्त होने के साथ-साथ एक अच्छे 'ग्लोबल सिटीजन' (विश्व नागरिक) भी बन सकते हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में 'वंदे मातरम' और भारतीय युवा

आज लाखों भारतीय युवा विदेशों में पढ़ाई कर रहे हैं या वहाँ नौकरियों में कार्यरत हैं। दिलचस्प बात यह है कि जब कोई व्यक्ति अपने देश की धरती से दूर जाता है, तो उसकी जड़ें और मजबूत हो जाती हैं। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर पर, लंदन के ट्राफ़लगर स्क्वायर पर या सिडनी के ओपेरा हाउस के बाहर जब भारतीय समुदाय के युवा इकट्ठा होते हैं और वहाँ रहमान का 'वंदे मातरम' गूँजता है, तो वह केवल एक गीत नहीं रह जाता। वह उनकी पहचान बन जाता है। वह उन्हें अपनी मिट्टी से जोड़ता है, उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने का अवसर देता है। विदेशी धरती पर वंदे मातरम आज के युवा के लिए 'मातृभूमि की याद' और 'गर्व' का एक अनूठा मिश्रण है। यह उन्हें याद दिलाता है कि वे चाहे दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएँ, उनका एक हिस्सा हमेशा भारत माता से जुड़ा रहेगा।

भविष्य की राह: युवा पीढ़ी के लिए वंदे मातरम की प्रासंगिकता

वंदे मातरम को आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बनाए रखने के लिए हमें इसके प्रस्तुतिकरण और समझ में कुछ बुनियादी बदलाव करने होंगे जैसे : पर्यावरण और प्रकृति से जोड़ना— वंदे मातरम की शुरुआती पंक्तियाँ पूरी तरह से प्रकृति को समर्पित हैं—पानी, फल, हवा, और फसलें। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन और कंक्रीट के जंगलों में बदलने की त्रासदी झेल रही है, तब युवाओं को यह समझाना जरूरी है कि श्वंदे मातरम कहना असल में अपनी नदियों को प्रदूषित होने से बचाना है, हवा को शुद्ध रखना है और मिट्टी की ऊर्वरा शक्ति की रक्षा करना है। जब राष्ट्रवाद को पर्यावरणवाद से जोड़ा जाएगा, तो युवा इसके साथ और अधिक शिद्ध से जुड़ेंगे; कला और रचनात्मकता को बढ़ावा— युवाओं को अपनी तरह से इस गीत को अभिव्यक्त करने की आजादी मिलनी चाहिए। चाहे वह पेंटिंग हो, फ्यूजन म्यूजिक हो, समकालीन नृत्य हो, या थियेटर। कला के माध्यम से जब युवा किसी विचार को आत्मसात करते हैं, तो

वह स्थायी हो जाता है; समावेशी विमर्श — स्कूलों और कॉलेजों में वंदे मातरम पर होने वाली बहसों राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से मुक्त होनी चाहिए। इसके साहित्यिक सौंदर्य, इसके ऐतिहासिक महत्व और इसके भाषाई (संस्कृत-बांग्ला मिश्रण) विशेषता पर अकादमिक चर्चाएँ होनी चाहिए, ताकि युवा इसके बौद्धिक पक्ष से भी परिचित हो सकें।

निष्कर्ष: हृदय की धड़कन बना मंत्र

यह कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा पीढ़ी और वंदे मातरम का संबंध टूटा नहीं है, बल्कि वह रूपांतरित हुआ है। आज के युवा को वंदे मातरम गाने के लिए किसी लाठी, डंडे या डिक्टेशन की जरूरत नहीं है। वह जब ओलंपिक में तिरंगे को ऊपर जाते देखता है, जब भारत का कोई उपग्रह अंतरिक्ष की गहराइयों को नापता है, या जब वह किसी दूरदराज के गाँव में जाकर किसी गरीब बच्चे को पढ़ा रहा होता है, तो उसके भीतर अनजाने ही 'वंदे मातरम' की चेतना स्पंदित हो रही होती है। यह गीत अब केवल इतिहास की किताबों का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह आज के युवा के 'आत्मविश्वास' का पर्याय बन चुका है। युवा पीढ़ी ने इसे अपनी भाषा, अपने संगीत और अपने कर्मों में ढाल लिया है। बंकिमचंद्र का यह मंत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक और जीवंत है, क्योंकि जब तक इस देश का युवा अपनी मिट्टी से प्यार करता रहेगा, तब तक हर धड़कन से एक ही आवाज आएगी—वंदे मातरम! मां तुझे सलाम!

आभार

इस लेख के लिए हम संयुक्त रूप से निदेशक, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, कोलकाता एवं प्रभारी अधिकारी, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, सोलन (हि०प्र०) और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, महानिदेशक श्रम ब्यूरो, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के आभारी हैं, जिन्होंने हमें इस लेख को लिखने के लिए प्रेरित किया।

संदर्भ सूची

1. चट्टोपाध्याय, बंकिमचंद्र. 2019 आनंदमठ। (मूल बंगाली, 1882); हिंदी अनुवाद, प्रभात प्रकाशन, 1-160
2. घोष, श्री अरबिंदो. 2002 वंदे मातरम: पॉलिटिकल राइटिंग्स एंड स्पीचेस (1905-1910) श्री अरबिंदो आश्रम ट्रस्ट, पांडिचेरी, 1-1180
3. सभ्रवाल, अजय. 2018 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और युवा चेतना। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1-184.
4. शर्मा, डॉ. महेशचंद्र. 2006 राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम': इतिहास और विवाद। प्रभात साहित्य, नई दिल्ली 1-128.
5. यादव, लक्ष्मिता एवं कुमार, अजय (2026). "वंदे मातरम: ए कॉम्प्रिहेंसिव एनालिसिस", जगन्नाथ यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्यूम 2, इश्यू 1, पृष्ठ 243-247।
6. राय, डॉ. रामबहादुर (2021). "21वीं सदी का भारत और युवाओं में राष्ट्रीय मूल्य", सांस्कृतिक प्रवाह पत्रिका, अंक 4, पृष्ठ 12-19।
7. पत्र सूचना कार्यालय (PIB), भारत सरकार (2025-2026). "वंदे मातरम के 150 वर्ष: राष्ट्र निर्माण और युवा सहभागिता"।
8. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार. 'ज्ञादवू पदकपं' राष्ट्रीय पहचान चिह्न एवं राष्ट्रगीत निर्देशिका।